बहुभाषावाद और शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा : चुनौतियाँ और संभावनाएँ

(Multilingualism and Mother Tongue as Medium of Instruction: Challenges and Possibilities)

- डॉ सर्वेश मौर्य

सारांश

बहुभाषावाद (Multilingualism) आज के वैश्विक परिदृश्य में एक महत्त्वपूर्ण वास्तविकता है. विश्व के अधिकांश देशों में एक से अधिक भाषाएँ बोली जाती हैं. इस संदर्भ में शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा का प्रश्न अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है. भारत जैसे बहुभाषी राष्ट्र, में जहाँ संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 आधिकारिक भाषाएँ, 121 भाषाएँ और सैकड़ों बोलियाँ प्रचलित हैं, यह प्रश्न और भी जटिल एवं महत्त्वपूर्ण हो जाता है. प्रस्तुत शोध-पत्र में बहुभाषावाद की अवधारणा, मातृभाषा-आधारित शिक्षा (Mother Tongue-Based Multilingual Education- MTB-MLE) के सैद्धांतिक आधार, इसके समक्ष आने वाली प्रमुख चुनौतियों तथा इसकी संभावनाओं का व्यापक विश्लेषण किया गया है. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में इस विषय की समीक्षा विशेष रूप से की गई है. साथ ही, विश्वविद्यालयस्तरीय शोध, सरकारी रिपोर्ट और अंतर्राष्ट्रीय अध्ययनों का विस्तृत साहित्य-समीक्षा भी प्रस्तुत की गई है.

मुख्य शब्द

बहुभाषावाद, मातृभाषा, शिक्षा का माध्यम, MTB-MLE, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भाषा नीति, संज्ञानात्मक विकास, साहित्य समीक्षा, द्विभाषिकता

1. प्रस्तावना

भाषा केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं है – यह विचार करने, सीखने और संसार को समझने का औजार है. जब कोई बच्चा विद्यालय में प्रवेश करता है, तो वह पहले से ही अपनी मातृभाषा में एक संपन्न संज्ञानात्मक आधार लेकर आता है. यदि शिक्षा उस भाषा में दी जाए जिसे वह नहीं जानता, तो वह न केवल विषय-वस्तु को नहीं समझता, बल्कि उसका समग्र बौद्धिक विकास भी अवरुद्ध होता है. "यूनेस्को की वैश्विक शिक्षा निगरानी रिपोर्ट के वकालत के संक्षिप्त विवरण के अनुसार, विश्व स्तर पर 40% शिक्षार्थियों को अपनी मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त नहीं होती है, जिससे साक्षरता और शैक्षणिक सफलता में महत्वपूर्ण बाधाएं पैदा होती हैं। कुछ निम्न और मध्यम आय वाले देशों में, यह आंकड़ा 90% तक बढ़ जाता है। एक अरब से अधिक शिक्षार्थी प्रभावित होते हैं।" यह आँकड़ा शिक्षा में बहुभाषावाद की महत्ता को रेखांकित करता है.[1] भारत में यह समस्या अत्यधिक जटिल है क्योंकि यहाँ 2011 की जनगणना के अनुसार 19,569 से अधिक मातृभाषाएँ[2] पहचानी गई हैं, जबकि शिक्षा का माध्यम प्रायः हिंदी, अंग्रेजी या कुछ प्रमुख क्षेत्रीय भाषाओं तक ही सीमित है. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020[3] ने इस विषय पर विशेष ध्यान देते हुए कम से कम कक्षा 5 तक – और यथासंभव

कक्षा 8 तक – मातृभाषा को शिक्षा का माध्यम बनाने की संस्तुति की है. यह नीतिगत परिवर्तन बहुभाषिक शिक्षा की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम है जो अंतर्राष्ट्रीय शोध अध्ययनों द्वारा समर्थित है.

2. साहित्य समीक्षा

बहुभाषावाद और मातृभाषा-आधारित शिक्षा पर वैश्विक और भारतीय साहित्य में व्यापक शोध उपलब्ध है. इस खंड में प्रमुख विद्वानों के योगदान, सिद्धांतात्मक ढाँचे और अनुभवजन्य अध्ययनों की समीक्षा की गई है.

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बहुभाषावाद और मातृभाषा-आधारित शिक्षा पर शोध

द्विभाषिकता और बहुभाषावाद के क्षेत्र में कनाडाई मनोवैज्ञानिक जिम कमिंस (Jim Cummins)[4] का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है. उनके 'अंतर-निर्भरता सिद्धांत' (Interdependence Hypothesis) ने प्रदर्शित किया है कि पहली भाषा (L1) में विकसित कौशल और संज्ञानात्मक क्षमताएँ द्वितीय भाषा (L2) के सीखने में सहायक होती हैं. उनका 'सामान्य अंतर्निहित प्रवीणता' (Common Underlying Proficiency - CUP) मॉडल यह सुझाता है कि भाषाएँ एक साझा संज्ञानात्मक आधार पर काम करती हैं. कमिंस ने 'बेसिक इंटरपर्सनल कम्युनिकेटिव स्किल्स' (BICS) और 'कॉग्निटिव अकेडमिक लैंग्वेज प्रोफिशिएंसी' (CALP) के बीच अंतर करते हुए बताया कि शैक्षणिक सफलता के लिए CALP का विकास आवश्यक है, जो मातृभाषा में सर्वश्रेष्ठ होता है.

UNESCO द्वारा 2003 में 'Education in a Multilingual World'[5] (बहुभाषी दुनिया में शिक्षा) शीर्षक से जारी पोजीशन पेपर, शिक्षा में भाषा नीति और बहुभाषावाद पर एक ऐतिहासिक दस्तावेज है. यह रिपोर्ट दुनिया भर की शिक्षा प्रणालियों में भाषा के महत्व और रणनीतियों पर मार्गदर्शक सिद्धांत प्रदान करती है. इस दस्तावेज में **तीन प्रमुख और मार्गदर्शक सिद्धांतों** पर विशेष जोर दिया गया है: एक - **मातृभाषा में शिक्षा का समर्थन** (Support Mother Tongue Instruction): रिपोर्ट के अनुसार, शुरुआती शिक्षा बच्चों की मातृभाषा (प्रथम भाषा) में होनी चाहिए. इससे शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार होता है, बच्चों की समझ बढ़ती है, और वे अपनी पढ़ाई से जुड़ाव महसूस करते हैं. दो - **द्विभाषी/बहुभाषी शिक्षा का प्रचार** (Promote Bilingual/Multilingual Education): शिक्षा के सभी स्तरों पर द्विभाषी और बहुभाषी दृष्टिकोणों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए. यह न केवल स्थानीय भाषाओं को सुरक्षित रखता है बल्कि शिक्षार्थियों को वैश्विक भाषाओं तक पहुंच भी प्रदान करता है. तीन - **अंतर-सांस्कृतिक शिक्षा का आधार** (Intercultural Education): भाषा को केवल संचार का माध्यम न मानकर सांस्कृतिक विविधता और आपसी समझ का एक अनिवार्य हिस्सा माना गया है. बहुभाषी शिक्षा सामाजिक न्याय और शांति को बढ़ावा देती है. रिपोर्ट का महत्व यह है कि यह बहुभाषी दृष्टिकोण की वकालत करता है, क्योंकि शिक्षा में सही भाषा का चुनाव न केवल सीखने की प्रक्रिया को आसान बनाता है बल्कि यह पहचान, राष्ट्रवाद और समानता जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों से भी जुड़ा होता है. UNESCO की 2003 की रिपोर्ट 'Education in a Multilingual World' ने स्पष्ट

रूप से सिफारिश की है कि बच्चों को उनकी मातृभाषा में शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए, कम से कम प्रारंभिक वर्षों में. यह रिपोर्ट विकासशील देशों में 40% बच्चों के आँकड़े को रेखांकित करती है जो गैर-मातृभाषी माध्यम में शिक्षा प्राप्त करते हैं. अमेरिकी शिक्षा विद्वान विलियम थॉमस (William P. Thomas) और वर्जीनिया कोलियर (Virginia P. Collier) का 2002 का अध्ययन "The Astounding Effectiveness of Dual Language Education for All" यह लेख द्विभाषी एवं द्वि-भाषा (Dual Language) शिक्षा के शैक्षिक प्रभावों पर आधारित एक महत्वपूर्ण अध्ययन है, जिसमें लेखकों ने दिखाया है कि दीर्घकालिक द्विभाषी शिक्षा कार्यक्रम भाषा-अल्पसंख्यक तथा भाषा-बहुसंख्यक दोनों प्रकार के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों को बेहतर बनाते हैं। यह साबित करता है कि द्विभाषिक शिक्षा प्राप्त छात्र अकेडमिक रूप से बेहतर प्रदर्शन करते हैं और उच्च पढ़ाई तक पहुँचते हैं.[6]

फिलीपींस, इथियोपिया, फिनलैंड और कनाडा जैसे देशों के सफल मॉडल दर्शाते हैं कि मातृभाषा-आधारित बहुभाषिक शिक्षा (MTB-MLE) न केवल शैक्षणिक उपलब्धि बढ़ाती है, बल्कि स्कूल से ड्रॉपआउट दर को भी कम करती है. ब्रिटिश शिक्षाविद कोलिन बेकर (Colin Baker) ने अपनी पुस्तक 'Foundations of Bilingual Education and Bilingualism'[7] में विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया है कि कैसे बहुभाषिक शिक्षा संज्ञानात्मक लचीलेपन (Cognitive Flexibility) को बढ़ाती है. कोलिन बेकर (Colin Baker) ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'Foundations of Bilingual Education and Bilingualism' में द्विभाषावाद (Bilingualism) और द्विभाषी शिक्षा के सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और शैक्षिक पहलुओं का विस्तृत विश्लेषण किया है. यह पुस्तक शिक्षकों, शोधकर्ताओं और नीति निर्माताओं के लिए एक बुनियादी मार्गदर्शिका मानी जाती है. बेकर केवल भाषा जानने को द्विभाषावाद नहीं मानते, बल्कि वे इसके विभिन्न स्तरों की चर्चा करते हैं: वे इसके दो रूप बताते हैं: पहला - व्यक्तिगत द्विभाषावाद जिसमें एक व्यक्ति की दो भाषाओं में दक्षता और उनका उपयोग करता है. दूसरा - सामुदायिक/सामाजिक द्विभाषावाद; जिसमें समाज के विभिन्न समूहों या राष्ट्र स्तर पर भाषाओं का सह-अस्तित्व होता है. बेकर ने द्विभाषी शिक्षा को दो व्यापक श्रेणियों में विभाजित किया है पहला - कमजोर रूप (Weak Forms): इसका मुख्य उद्देश्य अल्पसंख्यक भाषा बोलने वाले बच्चों को बहुमत की भाषा (जैसे अंग्रेजी) की ओर ले जाना होता है (उदा. संक्रमणकालीन शिक्षा). दूसरा - मजबूत रूप (Strong Forms): इनका लक्ष्य दोनों भाषाओं में पूर्ण साक्षरता और दक्षता विकसित करना होता है (उदा. विसर्जन (Immersion) या द्वि-साक्षरता कार्यक्रम). बेकार का सिद्धांत इस बात पर जोर देता है कि द्विभाषावाद केवल भाषा सीखने तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके कई संज्ञानात्मक लाभ (Cognitive Benefits) भी हैं, जैसे बेहतर समस्या समाधान कौशल और रचनात्मक सोच. उनके अनुसार ट्रांसलेंग्वेजिंग (ट्रांसलैंग्वेजिंग) एक आधुनिक अवधारणा है जहाँ छात्र अपनी पूरी भाषाई क्षमता (दोनों भाषाओं) का उपयोग सीखने और संवाद करने के लिए करते हैं एक ओर जहाँ वे यह मानते हैं कि प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा में होने से बच्चों का शैक्षणिक विकास

बेहतर होता है वहीँ दूसरी ओर द्विभाषावाद उनके लिए केवल एक शैक्षणिक मुद्दा नहीं है, बल्कि यह पहचान, सत्ता और राजनीति से भी गहराई से जुड़ा हुआ है.

भारतीय स्तर पर बहुभाषावाद और मातृभाषा-आधारित शिक्षा पर शोध

भारत में मातृभाषा-आधारित शिक्षा पर सबसे महत्वपूर्ण योगदान Debi Prasad Pattanayak का है, जिन्होंने 1981 में 'Multilingualism and Mother-Tongue Education'[8] प्रकाशित किया. पटनायक ने भारतीय भाषाई परिदृश्य को समझते हुए स्पष्ट किया है कि भारत की भाषाई विविधता शिक्षा का एक अनूठा सुयोग है, न कि समस्या. डॉ. पट्टनायक ने अपनी पुस्तक में इस बात पर जोर दिया है कि बच्चों की शुरुआती शिक्षा उनकी मातृभाषा (mother tongue) में ही होनी चाहिए. इससे न केवल उनकी संज्ञानात्मक (cognitive) क्षमता बेहतर होती है, बल्कि सीखने की प्रक्रिया भी आसान हो जाती है. वे बहुभाषावाद (Multilingualism) को संपत्ति मानते हैं. वह कोई बाधा या समस्या नहीं. इसमें उन्होंने बताया कि कैसे मातृभाषा में मजबूत आधार होने के बाद दूसरी या तीसरी भाषा (जैसे अंग्रेजी या कोई अन्य क्षेत्रीय भाषा) को सीखने में मदद मिलती है.

दूसरा महत्वपूर्ण शोध प्रख्यात भारतीय विद्वान अक्षय कुमार मोहंती (A. K. Mohanty) का है. जिन्होंने भारतीय माध्यमिक विद्यालयों में किए गए अनुदैर्ध्य अध्ययनों के माध्यम से प्रदर्शित किया है कि ओडिशा और अन्य राज्यों में आदिवासी भाषाओं में शिक्षा से गणित और विज्ञान में बेहतर परिणाम मिले हैं. मोहंती का 2006 का अध्ययन Multilingualism of the Unequals and Predicaments of Education in India: Mother Tongue or Other Tongue?'[9] भारत की असमान भाषाई शक्ति संरचना को विश्लेषित करता है.

NCERT के 2005 के राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF 2005)[10] ने भाषा के माध्यम के रूप में मातृभाषा को स्वीकार किया. भारतीय जनगणना के आँकड़ों (बी. पी. महापात्र, 1989) ने यह सिद्ध किया है कि भारत में सैकड़ों भाषाएँ दस हजार से अधिक लोगों द्वारा बोली जाती हैं, जिनमें से अधिकांश वर्तमान शिक्षा प्रणाली में प्रतिनिधित्व नहीं पाती हैं. महापात्र के 1989 के कार्य और आंकड़ों के कई प्रमुख आयाम हैं: उनमे एक आयाम लिखित भाषाओं का अध्ययन है जो बेहद महत्वपूर्ण है. उन्होंने 'द रिटन लैंग्वेजेज ऑफ द वर्ल्ड' (The Written Languages of the World, Vol. 2, India)[11] नामक प्रोजेक्ट के तहत 50 से अधिक भारतीय भाषाओं का सामाजिक-भाषाई (sociolinguistic) और जनसांख्यिकीय विश्लेषण प्रस्तुत किया था. दूसरा आयाम भाषाओं का वर्गीकरण है. उन्होंने संवैधानिक (Constitutional) और महत्वपूर्ण गैर-संवैधानिक भाषाओं को विस्तृत रूप से कवर किया था, जिसमें प्रत्येक भाषा के सामाजिक प्रयोग, लिपि और कार्यप्रणाली का विवरण था. तीसरा आयाम लिपि और मानकीकरण था. उनके शोध में यह भी सामने आया कि कैसे भाषाई पहचान बढ़ने के कारण समुदायों (जैसे संथाली भाषी समुदाय) ने अपनी लिपियों को उपयोग और मानकीकृत करने के प्रयास शुरू किए. उनके अध्ययनों ने यह स्थापित करने में मदद की कि कैसे भाषाएँ एक-दूसरे के भौगोलिक क्षेत्रों में मिलती हैं और उनमें साझा विशेषताएँ पाई जाती हैं. इसको

आधार बनाकर भी कई महत्वपूर्ण कार्य हुए हैं. "Multilingualism and the Language Classroom" (2025) नाम से रामानुजम मेगनाथन का शोध भी काफी मत्वपूर्ण है. इस अध्ययन में भारतीय कक्षाओं की वास्तविक बहुभाषिक स्थिति का विश्लेषण किया गया है. शोध के अनुसार बच्चों की भाषाओं को कक्षा में शामिल करने से सीखने की प्रक्रिया अधिक प्रभावी होती है। लेखक ने "मातृभाषा-आधारित बहुभाषिकता" और "ट्रांसलैंग्वेजिंग" को भारतीय शिक्षा के लिए आवश्यक बताया है.[12] अखिल कुमार सिंह का अध्ययन "From Policy to Practice" (2025) भी इस संदर्भ में दिशा देता है. उनका शोध राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में बहुभाषिक शिक्षा के प्रावधानों और उनके क्रियान्वयन की चुनौतियों का विश्लेषण करता है। अध्ययन के अनुसार मातृभाषा में शिक्षा से सीखने के परिणाम बेहतर हो सकते हैं, लेकिन संसाधनों, शिक्षकों और सामाजिक दृष्टिकोण जैसी बाधाएँ मौजूद हैं.[13] मिनती पांडा एवं सहयोगियों का शोध "Multilingualism and Multiliteracy in Primary Education in India" (2019) अध्ययन भारत के प्राथमिक विद्यालयों में बहुभाषिकता (multilingualism), बहुलिपिकता (multiliteracy), भाषा-अधिगम, साक्षरता, गणितीय क्षमता तथा संज्ञानात्मक विकास के बीच संबंधों की जाँच करता है। इसमें Multilila Project के अंतर्गत भारत के विभिन्न राज्यों के सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों के साथ किए गए दीर्घकालिक (longitudinal) शोध की पद्धतिगत चुनौतियों पर चर्चा की गई है. यह स्रोत भारतीय बहुभाषी शिक्षा, MTB-MLE, ट्रांसलैंग्वेजिंग, भाषा-नीति तथा प्राथमिक शिक्षा पर शोध के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। शोध ने दिखाया कि बहुभाषिक परिवेश बच्चों की भाषाई और संज्ञानात्मक क्षमताओं को समृद्ध करता है.[14] राजीव कुमार सिंह एवं सुनीता जे. कथूरिया के अध्ययन "Rethinking Teacher Education in Context to राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 and Multilingual Classrooms" (2024) में बहुभाषिक कक्षाओं के लिए शिक्षक-प्रशिक्षण की आवश्यकता पर बल दिया गया है. अध्ययन के अनुसार मातृभाषा में प्रारंभिक शिक्षा बच्चों के सीखने, आत्मविश्वास और सांस्कृतिक पहचान को मजबूत करती है.[15]

3. सैद्धांतिक संरचना:

वाइगोत्स्की और सामाजिक-सांस्कृतिक सिद्धांत

सोवियत मनोवैज्ञानिक लेव वाइगोत्स्की (Lev Vygotsky) का सामाजिक-सांस्कृतिक सिद्धांत (Sociocultural Theory) मातृभाषा शिक्षा के अध्ययन लिए एक महत्वपूर्ण सैद्धांतिक आधार प्रदान करता है. वाइगोत्स्की के अनुसार, भाषा और विचार गहराई से अंतर्संबंधित हैं. उनका 'निकटवर्ती विकास का क्षेत्र' (Zone of Proximal Development - ZPD) सिद्धांत बताता है कि सीखना सबसे प्रभावी तब होता है जब शिक्षक (या अधिक सक्षम साथी) बच्चे को उसकी अपनी भाषा में समर्थन प्रदान करते हैं. वाइगोत्स्की के संपूर्ण कार्य 'Thought and Language' (1986)[16] में भाषा की संज्ञानात्मक भूमिका पर विस्तृत विश्लेषण दिया गया है. उन्होंने बताया कि बच्चे को अपनी भाषा में

सोचने और संलाप करने की स्वतंत्रता दी जाए, तो उसका अधिगम अधिक प्रभावी होता है. यह सिद्धांत मातृभाषा-आधारित बहुभाषिक शिक्षा के मूल सिद्धांतों के साथ पूरी तरह सामंजस्यपूर्ण है.

संज्ञानात्मक विज्ञान और न्यूरोसाइंस में नवीन निष्कर्ष

आधुनिक न्यूरोसाइंस अनुसंधान यह स्पष्ट करता है कि द्विभाषी मस्तिष्क अनन्य तरीकों से विकसित होते हैं. हार्वर्ड विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं ने पाया है कि द्विभाषी बच्चों में कार्यकारी कार्य (Executive Function), मेमोरी प्रबंधन और समस्या समाधान की क्षमताएँ अधिक विकसित होती हैं. यह अतिरिक्त मानसिक लचीलापन (Cognitive Flexibility) न केवल भाषाई कौशल में बल्कि गणितीय और वैज्ञानिक सोच में भी सहायक होता है. कैथारिन स्कुटनैब-कांगास (Tove Skutnabb-Kangas) द्वारा 2000 में लिखी गई 'Linguistic Genocide in Education'[17] एक महत्वपूर्ण कृति है जो दर्शाती है कि अल्पसंख्यक भाषाओं को शिक्षा से बाहर रखना न केवल भाषाई बल्कि मानवाधिकार संबंधी समस्या भी है. लेखक का मानना है, जब बच्चों को उनकी मातृभाषा में शिक्षा से वंचित किया जाता है, तो यह भाषाई और सांस्कृतिक अधिकारों के हनन का रूप ले सकता है.

ट्रांसलैंग्वेजिंग सिद्धांत: बहुभाषिक शिक्षा में भाषाओं का एकीकृत उपयोग

आधुनिक शिक्षा के क्षेत्र में 'ट्रांसलैंग्वेजिंग' (ट्रांसलैंग्वेजिंग) एक नई और क्रांतिकारी अवधारणा है जो बहुभाषिक शिक्षा की हमारी समझ को पूरी तरह बदल देती है. यह सिद्धांत यह समझाता है कि बहुभाषी बच्चे किस तरह अपनी सभी भाषाओं को एक समन्वित प्रणाली के रूप में उपयोग करते हैं, न कि अलग-अलग भाषाई प्रणालियों के रूप में. भारत जैसे बहुभाषी देश में, जहाँ हजारों भाषाएँ और बोलियाँ बोली जाती हैं, यह सिद्धांत अत्यंत प्रासंगिक और महत्वपूर्ण हो जाता है.

पारंपरिक शिक्षा प्रणाली में यह मान्यता थी कि जब कोई बच्चा अपनी मातृभाषा छोड़कर किसी अन्य भाषा में शिक्षा ले, तो वह दोनों भाषाओं में पूरी तरह दक्ष हो सकता है. किंतु ट्रांसलैंग्वेजिंग सिद्धांत यह दर्शाता है कि वास्तव में बहुभाषी लोग अपनी सभी भाषाओं को एक समग्र संज्ञानात्मक प्रणाली के रूप में उपयोग करते हैं, और यह एकीकृत उपयोग सीखने को अधिक प्रभावी और सार्थक बनाता है.

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और भारतीय नीति दस्तावेज़

भारत सरकार की 2020 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति एक ऐतिहासिक दस्तावेज़ है जो मातृभाषा-आधारित शिक्षा के लिए स्पष्ट समर्थन प्रदान करती है. इसने निम्नलिखित की संस्तुति की गयी है: (1) कक्षा 5 तक मातृभाषा/स्थानीय भाषा को शिक्षा का माध्यम; (2) यथासंभव कक्षा 8 तक इसका विस्तार; (3) भारतीय भाषाओं में उच्च शिक्षा सामग्री का निर्माण; और (4) NIPUN Bharat कार्यक्रम के माध्यम से बुनियादी साक्षरता पर विशेष बल. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अलावा, भारतीय संविधान का अनुच्छेद 350A[18] भाषाई अल्पसंख्यकों को अपनी मातृभाषा में शिक्षा का अधिकार देता

है. यह संवैधानिक प्रावधान यह सुनिश्चित करता है कि भाषा नीति केवल शैक्षणिक नहीं, बल्कि सांवैधानिक अधिकार भी है.

4. अवधारणात्मक ढाँचा

बहुभाषावाद की परिभाषा और प्रकार

बहुभाषावाद (Multilingualism) वह स्थिति है जिसमें कोई व्यक्ति, समुदाय या समाज एक से अधिक भाषाओं का उपयोग करता है. इसे तीन मुख्य स्तरों पर विश्लेषित किया जा सकता है:

- **व्यक्तिगत बहुभाषावाद** (Individual Multilingualism): जब एक व्यक्ति दो या अधिक भाषाएँ सक्षमता के विभिन्न स्तरों पर जानता और उपयोग करता हो.
- **सामाजिक बहुभाषावाद** (Societal Multilingualism): जब किसी समाज, क्षेत्र या राष्ट्र में एकाधिक भाषाएँ प्रचलित हों और समुदाय के विभिन्न सदस्य विभिन्न भाषाओं का उपयोग करते हों.
- **शैक्षिक बहुभाषावाद** (Educational Multilingualism): जब विद्यालयों, महाविद्यालयों और अन्य शैक्षणिक संस्थानों में एक से अधिक भाषाओं में शिक्षा प्रदान की जाए.

मातृभाषा की परिभाषा: भाषाई और मनोवैज्ञानिक आयाम

मातृभाषा (Mother Tongue) की परिभाषा सरल दिखती है किंतु अपने आप में जटिल है. सामान्य परिभाषा के अनुसार, मातृभाषा वह भाषा है जिसे बच्चा बचपन में सर्वप्रथम अपने परिवार और समुदाय से सीखता है. भाषाविज्ञान में इसे 'पहली भाषा' (L1) या 'मूल भाषा' (Native Language) कहा जाता है. किंतु UNESCO के अनुसार मातृभाषा (mother tongue) केवल वह भाषा नहीं है जो व्यक्ति बचपन में सबसे पहले सीखता है, बल्कि वह भाषा भी हो सकती है जिससे व्यक्ति अपनी पहचान जोड़ता है, जिसे वह सबसे अच्छी तरह समझता है, या जिसका वह सबसे अधिक उपयोग करता है. इस प्रकार, मातृभाषा की अवधारणा केवल प्रारम्भिक अधिगम तक सीमित नहीं है, बल्कि भाषाई दक्षता, पहचान और सामाजिक प्रयोग से भी जुड़ी हुई है.[19] मनोवैज्ञानिक दृष्टि से, मातृभाषा व्यक्ति की पहचान, संस्कृति, भावनाओं और अवचेतन मन से गहराई से जुड़ी होती है. जब कोई बच्चा अपनी मातृभाषा में सोचता, बोलता और सीखता है, तो उसे एक आवेगात्मक सुरक्षा मिलती है. यह भाषा उसके परिवार की विरासत, सांस्कृतिक मूल्यों और समुदाय के साथ संबंध का वाहक होती है.

मातृभाषा-आधारित बहुभाषिक शिक्षा (MTB-MLE) की संरचना और चरण

मातृभाषा-आधारित बहुभाषिक शिक्षा (Mother Tongue-Based Multilingual Education - MTB-MLE) एक सुसंगत और क्रमबद्ध शैक्षणिक उपागम है. इसमें बच्चे की शिक्षा उसकी मातृभाषा (L1) में प्रारंभ होती है, और फिर क्रमशः अन्य भाषाओं को जोड़ा जाता है. आदर्श MTB-MLE मॉडल के तीन प्रमुख चरण निम्नलिखित हैं:

- **प्रथम चरण** (कक्षा 1-2): प्रारंभिक साक्षरता और संख्या-ज्ञान मातृभाषा में. यह चरण बुनियादी पठन, लेखन और गणित कौशल पर केंद्रित है.
- **द्वितीय चरण** (कक्षा 3-5): ब्रिज भाषा (Bridge Language) के रूप में क्षेत्रीय या राष्ट्रीय भाषा (L2) का परिचय, जबकि मातृभाषा अभी भी मुख्य माध्यम बनी रहे.
- **तृतीय चरण** (कक्षा 6+): अंतर्राष्ट्रीय भाषा (सामान्यतः अंग्रेजी) और अन्य विषय-विशिष्ट भाषाओं का परिचय, किंतु मातृभाषा सहायक माध्यम के रूप में जारी रहती है.

5. भारत में मातृभाषा-आधारित बहुभाषिक शिक्षा की वर्तमान चुनौतियाँ

भारत में मातृभाषा-आधारित शिक्षा की व्यवहारिक क्रियान्वयन में अनेक गंभीर चुनौतियाँ हैं. ये चुनौतियाँ संसाधन, नीति, समाज-आर्थिक कारकों और तकनीकी क्षेत्रों में फैली हुई हैं. ये इस प्रकार हैं-

संसाधनों और बुनियादी ढाँचे की कमी

भारत में सैकड़ों भाषाओं के लिए मानक पाठ्यपुस्तकें, व्यापक शब्दकोश, डिजिटल संसाधन और प्रशिक्षित शिक्षकों का अभाव एक प्रमुख बाधा है. अनेक आदिवासी और जनजातीय भाषाओं के लिए अभी भी मानकीकृत लिपि तय नहीं की गई है. उदाहरण के लिए, कई भाषाएँ देवनागरी लिपि में लिखी जाती हैं, कुछ रोमन में, और कुछ की अपनी लिपि है. यह विविधता पाठ्यपुस्तक निर्माण और डिजिटलकरण दोनों में कठिनाई पैदा करती है. DIKSHA, e-Pathshala जैसे डिजिटल प्लेटफॉर्म पर अधिकांश सामग्री हिंदी और अंग्रेजी में उपलब्ध है. छोटी भाषाओं के लिए ऑनलाइन शैक्षणिक संसाधन लगभग नहीं के बराबर हैं. यह डिजिटल विभाजन (Digital Divide) केवल सामग्री का विभाजन नहीं है, बल्कि यह शिक्षा में असमानता को और गहरा करता है. इसका संज्ञान लेने के साथ-साथ इससे निपटने के उपाय किये जाने चाहिए.

सामाजिक-आर्थिक दबाव और भाषा की प्रतिष्ठा

आर्थिक और सामाजिक दबाव मातृभाषा-शिक्षा के सामने एक बड़ी चुनौती है. अभिभावक प्रायः अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में अपने बच्चों को भेजना चाहते हैं क्योंकि उन्हें विश्वास है कि अंग्रेजी उन्नत रोजगार के अवसर प्रदान करेगी. भारत में बड़ी निजी अंग्रेजी माध्यम स्कूलों की चेन मध्यम वर्ग के सपनों का प्रतीक बन गई है. साथ ही, भारतीय समाज में एक अस्पष्ट भाषाई पदानुक्रम (Linguistic Hierarchy) मौजूद है जहाँ अंग्रेजी शिक्षा और आधुनिकता का प्रतीक है, हिंदी का एक मध्य स्तर है, और क्षेत्रीय या आदिवासी भाषाओं को अक्सर 'निम्न', 'पिछड़ी' या 'अशिक्षित' समझा जाता है. यह मानसिकता संविधान और भाषाई लोकतंत्र के विपरीत है, किंतु यह समाज में गहराई से व्याप्त है.

नीति-क्रियान्वयन की असंगतियाँ

भले ही राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और पहले के संविधान और शिक्षा नीति दस्तावेज़ मातृभाषा-शिक्षा का समर्थन करते हैं, किंतु व्यवहार में इसका क्रियान्वयन अत्यंत असमान और अधूरा है. केंद्रीय नीति और राज्य स्तर पर इसके क्रियान्वयन में बड़े अंतर हैं. कई प्रदेशों में परीक्षा का माध्यम और शिक्षण का माध्यम अलग-अलग हैं. उदाहरण के लिए, कक्षा 5 तक शिक्षा क्षेत्रीय भाषा में दी जाती है, किंतु

परीक्षा अंग्रेजी या हिंदी में होती है. यह असंगतता बच्चे को भ्रमित करती है और उसकी सीखने की क्षमता को कम करती है.

शिक्षक प्रशिक्षण और योग्यता की कमी

बहुभाषिक शिक्षा के लिए विशेषिकृत शिक्षकों की भारी कमी है. अधिकांश शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रम (B.Ed., D.El.Ed.) में बहुभाषिक शिक्षाशास्त्र पर कोई विशेष प्रशिक्षण नहीं दिया जाता. एक शिक्षक को बहुभाषिक कक्षा में निम्नलिखित कौशलों की आवश्यकता होती है: (1) बच्चे की मातृभाषा का ज्ञान; (2) कोड-स्विचिंग (Code-Switching) की समझ और कुशलता; (3) ट्रांसलैंग्वेजिंग तकनीकों की जानकारी; और (4) सांस्कृतिक संवेदनशीलता. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने शिक्षक प्रशिक्षण में सुधार की आवश्यकता को स्वीकार किया है, किंतु इसके लिए अभी तक कोई ठोस राष्ट्रीय कार्यक्रम नहीं बनाया गया है. उम्मीद है इस पर जल्द ही कोई पहल होगी.

भाषा संरक्षण और विलुप्ति का संकट

जब किसी भाषा को शिक्षा प्रणाली में स्थान नहीं मिलता, तो वह धीरे-धीरे विलुप्त हो जाती है. भारत में सैकड़ों भाषाएँ विलुप्त होने के कगार पर हैं. Linguistic Survey of India के आँकड़ों के अनुसार, कई भाषाओं को अब केवल 100-500 लोग बोलते हैं. जब एक भाषा मरती है, तो केवल शब्द नहीं मरते – उसके साथ ज्ञान की एक पूरी प्रणाली, सांस्कृतिक परंपराएँ, और सदियों की विरासत भी खो जाती है. इन्हें संजोना भी हमारी जिम्मेदारी है.

6. मातृभाषा-आधारित बहुभाषिक शिक्षा की वर्तमान चुनौतियां और ट्रांसलैंग्वेजिंग टेकनीक

ट्रांसलैंग्वेजिंग का अर्थ और परिभाषा

ट्रांसलैंग्वेजिंग (Translanguaging) की अवधारणा का प्रारम्भिक विकास Cen Williams ने 1994 में वेल्श शब्द *'Trawsieithu'* के रूप में किया था. बाद में Ofelia García ने 2009 में इस अवधारणा को व्यापक सैद्धान्तिक आधार प्रदान किया और इसे बहुभाषी वक्ताओं द्वारा अपनी संपूर्ण भाषाई संसाधन-व्यवस्था (linguistic repertoire) के लचीले उपयोग की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया. इसलिए ट्रांसलैंग्वेजिंग को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय और सैद्धान्तिक रूप से स्थापित करने का श्रेय मुख्यतः García (2009)[20] को दिया जाता है. गार्सिया के अनुसार, 'ट्रांसलैंग्वेजिंग' एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें बहुभाषी व्यक्ति अपनी सभी उपलब्ध भाषाओं को एक समन्वित और गतिशील तरीके से उपयोग करते हैं. यह सिर्फ एक भाषा से दूसरी भाषा में 'स्विच' करना नहीं है, बल्कि सभी भाषाओं को एक समग्र संसाधन के रूप में उपयोग करके अर्थ निर्माण करना है.

सरल भाषा में कहें, तो ट्रांसलैंग्वेजिंग का अर्थ है कि जब एक बहुभाषी बच्चा कुछ सीखना चाहता है, तो वह अपने सभी भाषाओं का लचीले तरीके से और एक साथ उपयोग करता है. वह एक भाषा में अवधारणा समझता है, दूसरी में सवाल पूछता है, और तीसरी में अपना विचार व्यक्त करता है. यह प्रक्रिया स्वाभाविक, सहज और अत्यंत प्रभावी होती है.

ट्रांसलैंग्वेजिंग का सिद्धांत

ट्रांसलैंग्वेजिंग का मूल आधार कनाडाई मनोवैज्ञानिक जिम कमिंस (Jim Cummins) के 'कॉमन अंतर्निहित प्रवीणता' (Common Underlying Proficiency - CUP) सिद्धांत में निहित है. कमिंस के अनुसार, सभी भाषाएँ एक समान संज्ञानात्मक आधार पर काम करती हैं. इसका अर्थ यह है कि जब कोई व्यक्ति एक भाषा में कोई संज्ञानात्मक कौशल सीखता है (जैसे तार्किक चिंतन, समस्या-समाधान, या पाठ को समझना), तो वह कौशल उसकी सभी भाषाओं में स्वतः स्थानांतरित हो जाता है. CUP सिद्धांत का तात्पर्य यह है कि भाषाएँ अलग-अलग 'डिब्बों' (silos) में काम नहीं करतीं. बल्कि, वे एक-दूसरे को समर्थन करती हैं और एक-दूसरे को समृद्ध करती हैं. इसलिए, जब कोई बहुभाषी बच्चा अपनी सभी भाषाओं का उपयोग करता है, तो वह अपने संज्ञानात्मक संसाधनों का अधिकतम उपयोग करता है. ट्रांसलैंग्वेजिंग को इसी CUP सिद्धांत का एक व्यावहारिक अनुप्रयोग माना जा सकता है.

रूसी मनोवैज्ञानिक लेव वाइगोत्स्की (Lev Vygotsky) के सामाजिक-सांस्कृतिक सिद्धांत के अनुसार, भाषा केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं है, बल्कि यह विचार का साधन भी है. बच्चा उस भाषा में सबसे अच्छी तरह सीखता है जिसमें वह सोचता है. ट्रांसलैंग्वेजिंग सिद्धांत इसी वाइगोत्स्की के विचार पर आधारित है. जब एक बहुभाषी बच्चा ट्रांसलैंग्वेजिंग करता है – अपनी मातृभाषा में सोचता है, ब्रिज भाषा में प्रश्न पूछता है, और अंग्रेजी में उत्तर लिखता है – तो वह अपने 'निकटवर्ती विकास के क्षेत्र' (Zone of Proximal Development) में काम कर रहा है. यह सीखना सबसे प्रभावी होता है. शिक्षक का कार्य यह है कि वह इस बहुभाषिक संवाद को न केवल अनुमति दे, बल्कि इसे सक्रिय रूप से प्रोत्साहित करे.

ऑफेलिया गार्सिया ने ट्रांसलैंग्वेजिंग को केवल एक भाषाई घटना के रूप में नहीं, बल्कि एक शैक्षणिक और सामाजिक दर्शन के रूप में प्रस्तुत किया. गार्सिया के अनुसार, ट्रांसलैंग्वेजिंग अपने दुनिया को समझने और उसके साथ बातचीत करने का; बहुभाषी लोगों का सामान्य और प्राकृतिक तरीका है. जब शिक्षा इस प्राकृतिकता को स्वीकार करती है और समर्थन करती है, तो शिक्षण अधिक प्रभावी, समावेशी और मानवीय हो जाता है. गार्सिया का मत है कि ट्रांसलैंग्वेजिंग केवल एक शिक्षा रणनीति नहीं है, बल्कि यह भाषाई न्याय का एक प्रश्न है.

कोड-स्विचिंग और ट्रांसलैंग्वेजिंग का अंतर

कोड-स्विचिंग (Code-Switching) और ट्रांसलैंग्वेजिंग को अक्सर एक ही समझ लिया जाता है, किंतु ये दोनों पूरी तरह अलग-अलग अवधारणाएँ हैं. Code-Switching एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें कोई व्यक्ति एक भाषा से दूसरी भाषा में पूरी तरह स्विच कर जाता है. उदाहरण के लिए, कोई व्यक्ति सोमवार को अंग्रेजी बोलता है क्योंकि वह कार्यालय में है, और घर आने पर हिंदी बोलता है. यह एक सचेत, इरादतन और अक्सर सामाजिक संदर्भ के आधार पर निर्धारित प्रक्रिया है.

इसके विपरीत, ट्रांसलैंग्वेजिंग एक अधिक जटिल और समग्र प्रक्रिया है. इसमें व्यक्ति एक ही वाक्य, एक ही विचार, या एक ही समय में कई भाषाओं के संसाधनों को मिलाता है. उदाहरण के लिए, जब

कोई गणित के सवाल को समझने के लिए अपनी मातृभाषा का उपयोग करे, लेकिन समाधान अंग्रेजी में लिखे, और अपने मित्र को तीसरी भाषा में समझाए – यह सब एक ही संज्ञानात्मक प्रक्रिया के भाग हैं. यह न तो अचेतन है और न ही सामाजिक संदर्भ का परिणाम, बल्कि सीखने की एक सचेत और प्रभावी रणनीति है.

Code-Switching को अक्सर भाषाई 'दुर्बलता' या 'असफलता' माना जाता है – यह सुझाव देता है कि व्यक्ति किसी एक भाषा में पूरी तरह सक्षम नहीं है. किंतु ट्रांसलैंग्वेजिंग को एक संज्ञानात्मक शक्ति माना जाता है. यह दर्शाता है कि व्यक्ति अपनी सभी भाषाओं को सफलतापूर्वक एकीकृत कर सकता है.

ट्रांसलैंग्वेजिंग टेकनीक की प्रक्रिया

ट्रांसलैंग्वेजिंग की प्रक्रिया को विभिन्न तरीकों से समझा जा सकता है. उसके चार मुख्य तंत्र निम्नलिखित हैं-

- लेक्सिकल बॉरिंग (Lexical Borrowing): जब कोई शब्द एक भाषा में बेहतर अभिव्यक्त हो सकता है, तो व्यक्ति उस भाषा से शब्द उधार लेता है. उदाहरण: 'मेरा motivation बहुत कम है' या 'यह सिचुएशन बहुत difficult है.' ऐसे शब्दों का उपयोग सार्थक है क्योंकि वे सटीक भाव व्यक्त करते हैं.
- कॉन्सेप्चुअल ब्लेंडिंग (Conceptual Blending): दोनों भाषाओं की धारणाओं और ज्ञान को मिलाना. उदाहरण: किसी बच्चे को अंग्रेजी में गणितीय अवधारणा सिखाई जा रही है, लेकिन शिक्षक हिंदी में उदाहरण देता है. बच्चा दोनों भाषाओं से ज्ञान को मिलाकर एक समग्र समझ बनाता है.
- ट्रांजिशनल बिल्डिंग (Transitional Building): एक भाषा में अवधारणा का आधार बनाना, फिर दूसरी भाषा में विस्तार करना. उदाहरण: पहले बच्चे को हिंदी में एक विषय की मूल बातें समझाई जाएँ, फिर धीरे-धीरे अंग्रेजी शब्दावली जोड़ी जाए.
- कॉग्निटिव लिंकिंग (Cognitive Linking): विभिन्न भाषाओं में ज्ञान को आपस में जोड़ना. उदाहरण: अंग्रेजी साहित्य को अपने सांस्कृतिक संदर्भ में समझना, या अंग्रेजी वैज्ञानिक अवधारणाओं को अपनी मातृभाषा की ज्ञान परंपरा से जोड़ना.

कक्षा में ट्रांसलैंग्वेजिंग टेकनीक

उदाहरण 1: विज्ञान पाठ

कल्पना करें कि एक विज्ञान शिक्षक कक्षा 6 में 'पारिस्थितिकी तंत्र' (Ecosystem) के बारे में पढ़ा रहा है. शिक्षक पहले अंग्रेजी में विषय को समझाता है: 'An ecosystem is a community of living organisms interacting with their physical environment.' एक बच्चा हाथ उठाता है और हिंदी में सवाल पूछता है: 'सर, क्या हमारे आस-पास का जंगल भी एक ecosystem है?' शिक्षक इस सवाल का स्वागत करता है और कहता है: 'हाँ, बिल्कुल! हमारे आस-पास का जंगल एक जीवंत

पारिस्थितिकी तंत्र है.' अब एक और बच्चा अपनी स्थानीय भाषा (मराठी) में एक उदाहरण देता है. इस स्थिति में, शिक्षक और बच्चे ट्रांसलैंग्वेजिंग का उपयोग कर रहे हैं. बच्चे को अंग्रेजी अवधारणा को अपनी भाषा में पूछने की अनुमति दी गई है, जिससे उसे बेहतर समझ मिली है. इसका सकारात्मक परिणाम यह होता है कि सभी बच्चे गहरी समझ, बेहतर सीखना, और कक्षा में सक्रिय भागीदार महसूस करते हैं.

उदाहरण 2: साहित्य और लेखन

एक शिक्षक बच्चों को कहानी लिखने के लिए कहता है. कक्षा में अलग-अलग भाषाएँ बोलने वाले बच्चे हैं. एक बच्चा अपनी कहानी इस तरह लिखता है: 'एक बार की बात है (Once upon a time), एक गाँव में एक किसान रहता था. वह बहुत मेहनत करता था, लेकिन उसे कभी success नहीं मिली. फिर एक दिन, एक sage ने उसे advice दी...' इस कहानी में बच्चा तीन भाषाओं को मिला रहा है. शिक्षक इसे सुधारता नहीं करता, बल्कि इसे स्वीकार करता है क्योंकि समझ और अभिव्यक्ति स्पष्ट है. बच्चा अपनी सभी भाषाओं का लचीले तरीके से उपयोग करके अपनी कहानी को जीवंत बना रहा है. यही है कक्षा में ट्रांसलैंग्वेजिंग

ट्रांसलैंग्वेजिंग टेकनीक की चुनौतियाँ

नीति और प्रणाली में बाधाएँ

हालांकि ट्रांसलैंग्वेजिंग एक प्रमाणित और प्रभावी शिक्षा दृष्टिकोण है, लेकिन इसे भारतीय शिक्षा प्रणाली में अभी तक पूरी तरह स्वीकार नहीं किया गया है. अधिकांश शिक्षा प्रणालियाँ अभी भी 'मोनोलिंगुअल' (एकभाषिक) दृष्टिकोण को प्राथमिकता देती हैं. परीक्षाएँ एक ही भाषा में होती हैं, पाठ्यक्रम एकभाषिक संदर्भ में बनाए जाते हैं, और शिक्षकों को बहुभाषिक शिक्षाशास्त्र में कोई प्रशिक्षण नहीं मिलता. भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने मातृभाषा-आधारित शिक्षा का समर्थन किया है, लेकिन ट्रांसलैंग्वेजिंग को स्पष्ट रूप से परिभाषित नहीं किया गया है. इसका मतलब यह है कि व्यावहारिक स्तर पर क्रियान्वयन में अभी लम्बी लड़ाई लड़नी होगी और रास्ता अभी कठिन है.

भाषाई असमानता

भारत में एक गहरा भाषाई पदानुक्रम (linguistic hierarchy) मौजूद है. अंग्रेजी को सर्वोच्च माना जाता है, हिंदी को दूसरा, और क्षेत्रीय/स्थानीय भाषाओं को अक्सर 'निम्न' समझा जाता है. आदिवासी भाषाओँ को अभी भी हेय समझा जाता है. इस मानसिकता के कारण माता-पिता और यहाँ तक कि शिक्षक भी अपनी भाषा में शिक्षा को कम महत्व देते हैं या उससे झिझकते हैं.

शिक्षक प्रशिक्षण की कमी

अधिकांश शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों में बहुभाषिक शिक्षाशास्त्र पर कोई विशेष प्रशिक्षण नहीं दिया जाता. शिक्षकों को यह नहीं सिखाया जाता कि बहुभाषिक कक्षा को कैसे संचालित किया जाए, या ट्रांसलैंग्वेजिंग को कक्षा में कैसे प्रोत्साहित किया जाए. इससे कई शिक्षक बहुभाषिकता को एक समस्या मानते हैं, न कि एक संसाधन.

सांस्कृतिक और सामाजिक दबाव

भारतीय समाज में कोलोनियल माइंडसेट के चलते अंग्रेजी की शक्ति अभी भी इतनी अधिक है कि माता-पिता अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में भेजना चाहते हैं. उन्हें लगता है अंग्रेजी ही विकास और उज्जवल भविष्य की भाषा है. इस सामाजिक दबाव के कारण बहुभाषी संसाधन को समझना मुश्किल हो जाता है. कई परिवारों का आज भी यह मानना है कि घर पर मातृभाषा में बात करने से बच्चे की अंग्रेजी कमजोर हो जाएगी. यह क्रेज अब घटने के बजाय बढ़ रहा है.

ट्रांसलैंग्वेजिंग टेकनीक के लाभ

संज्ञानात्मक विकास

जब बच्चे को अपनी सभी भाषाओं का उपयोग करने की स्वतंत्रता दी जाती है, तो उसका संज्ञानात्मक विकास अधिक समृद्ध और गहरा होता है. ट्रांसलैंग्वेजिंग से निम्नलिखित संज्ञानात्मक लाभ मिलते हैं:

- अधिक समृद्ध सोच: जब कोई अवधारणा कई भाषाओं से आती है, तो समझ अधिक विविध और समृद्ध होती है.
- बेहतर समस्या-समाधान कौशल: बहुभाषी सोच किसी समस्या को विभिन्न दृष्टिकोणों से देखने की क्षमता प्रदान करती है.
- उच्च संज्ञानात्मक लचीलापन: बहुभाषी बच्चे अधिक लचीले चिंतक होते हैं और विभिन्न परिस्थितियों के अनुकूल ढल सकते हैं.

शैक्षणिक सफलता

शोध अध्ययन दर्शाते हैं कि ट्रांसलैंग्वेजिंग से बच्चों की शैक्षणिक उपलब्धि में वृद्धि होती है. जब बच्चे को अपनी मातृभाषा में अवधारणाओं को समझने की अनुमति दी जाती है, तो वह अन्य भाषाओं में भी बेहतर प्रदर्शन करता है. यह कमिंस के अंतर-निर्भरता सिद्धांत को प्रमाणित करता है.

- पठन-लेखन कौशल में सुधार
- गणित और विज्ञान में उच्च उपलब्धि
- दीर्घकालीन शिक्षा में सफलता

सामाजिक-भावनात्मक लाभ

ट्रांसलैंग्वेजिंग केवल अकादमिक नहीं, बल्कि बहुत अधिक सामाजिक-भावनात्मक लाभ भी प्रदान करती है. जब बच्चे को अपनी भाषा में बोलने की अनुमति दी जाती है तो उसके कई सामाजिक भावनात्मक लाभ होते हैं. कुछ मुख्य लाभ निचे दर्शाए गए हैं-

- बेहतर आत्मविश्वास और आत्म-सम्मान
- कक्षा में अधिक भागीदारी और सहभागिता
- भाषाई और सांस्कृतिक पहचान को मजबूत करना
- स्कूल ड्रॉपआउट दर में कमी

7. मातृभाषा-आधारित बहुभाषिक शिक्षा क्रियान्वयन के लिए अन्य समाधान और सुझाव

शिक्षकों के लिए रणनीतियाँ

- बहुभाषी संसाधनों को वैध मानें: अध्यापक और स्कूल को यह समझना चाहिए कि बहुभाषिकता एक शक्ति है, न कि कमजोरी. कक्षा में जब कोई बच्चा अपनी भाषा में बोले, तो उसे स्वीकार करें.
- लचीला शिक्षाशास्त्र (Flexible Pedagogy) अपनाएँ: अध्यापक और स्कूल कक्षा में एक भाषा पर कठोर नियंत्रण न रखें. बहुभाषी संवाद को प्रोत्साहित करें और इसे अधिगम का एक साधन बनाएँ.
- साथियों से सीखना (Peer Learning) को प्रोत्साहित करें: अध्यापक और स्कूल अलग-अलग भाषाओं वाले बच्चों को आपस में सहयोग करने दें. वे एक-दूसरे को अपनी भाषाओं में समझाएँ.
- बहुभाषी सामग्री का उपयोग करें: अध्यापक और स्कूल पाठ्यपुस्तकें, विडिओ, और अन्य संसाधन कई भाषाओं में उपलब्ध कराएँ.

नीति स्तर पर सुझाव

- शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सुधार: B.Ed. और D.El.Ed. पाठ्यक्रमों में बहुभाषिक शिक्षाशास्त्र को अनिवार्य करें.
- परीक्षा प्रणाली को लचीला बनाएँ: परीक्षा में बहुभाषिक प्रतिक्रियाओं को स्वीकार करें.
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को स्पष्ट रूप से लागू करें: ट्रांसलैंग्वेजिंग को नीति में स्पष्ट रूप से परिभाषित करें और इसके क्रियान्वयन के लिए संसाधन आवंटित करें.
- अभिभावक जागरूकता: माता-पिता को समझाएँ कि घर पर मातृभाषा बोलना बच्चे की शिक्षा में सहायक है बाधक नहीं.

निष्कर्ष

बहुभाषावाद और मातृभाषा-आधारित शिक्षा न केवल भाषाई न्याय का प्रश्न है, बल्कि यह गुणवत्तापूर्ण, समावेशी और सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील शिक्षा की बुनियादी आवश्यकता है. विश्वविद्यालयों, अनुसंधान संस्थानों और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के दशकों के शोध स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि जब बच्चा अपनी मातृभाषा में सीखता है, तो वह न केवल विषय-वस्तु को अधिक अच्छी तरह समझता है, बल्कि उसका समग्र व्यक्तित्व विकास, आत्मविश्वास और सामाजिक कौशल भी अधिक सुदृढ़ होते हैं. भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में, जहाँ भाषाएँ जीवन-पद्धति की अभिव्यक्ति हैं, शिक्षा की भाषा नीति का सीधा संबंध सामाजिक न्याय, सांस्कृतिक अस्मिता, आर्थिक समानता और राष्ट्रीय एकता से है. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने इस दिशा में सही और साहसिक कदम उठाया है, किंतु इसका सफल क्रियान्वयन देश के राज्यों, शैक्षणिक संस्थानों, शिक्षकों, माता-पिता और समुदायों की सक्रिय, समन्वित और दीर्घकालीन प्रतिबद्धता पर निर्भर करता है.

यह शोध-पत्र स्पष्ट करता है कि मातृभाषा-आधारित शिक्षा एक आदर्शवादी सपना नहीं है, बल्कि एक वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृत और भारतीय संविधान द्वारा समर्थित शैक्षणिक दृष्टिकोण है. इसे वास्तविकता में परिणत करने के लिए दृढ़ राजनीतिक इच्छा, पर्याप्त वित्त पोषण, और सामाजिक सहमति की आवश्यकता है.

सन्दर्भ-सूची

[1] UNESCO. (2025, March 4). What you need to know about multilingual education. https://www.unesco.org/en/languages-education/need-know

[2] Office of the Registrar General & Census Commissioner, India. (n.d.). Concepts and definitions. Language Census of India. https://language.census.gov.in/infographics/data/showConceptsDefinitions

[3] Ministry of Education, Government of India. (2020). National Education Policy 2020. New Delhi: Ministry of Education.

[4] Cummins, J. (1979). Linguistic interdependence and the educational development of bilingual children. Review of Educational Research, 49(2), 222–251.

[5] UNESCO. (2003). Education in a multilingual world. Paris: UNESCO. https://www.unesco.org/en/articles/education-multilingual-world-unesco-education-position-paper

[6] Collier, V. P., & Thomas, W. P. (2004). The astounding effectiveness of dual language education for all. NABE Journal of Research and Practice, 2(1), 1–20. https://www.berkeleyschools.net/wp-content/uploads/2011/10/TWIAstounding_Effectiveness_Dual_Language_Ed.pdf?864d7e

[7] Baker, C. (2011). Foundations of bilingual education and bilingualism (5th ed.). Bristol, UK: Multilingual Matters.

[8] Pattanayak, D. P. (1981). *Multilingualism and mother-tongue education*. Delhi: Oxford University Press.

[9] Mohanty, A. K. (2006). Multilingualism of the unequals and predicaments of education in India: Mother tongue or other tongue? In O. García & C. Baker (Eds.), Bilingual education: An introductory reader (pp. 262–283). Clevedon, UK: Multilingual Matters.

[10] NCERT. (2005). National curriculum framework 2005. New Delhi: National Council of Educational Research and Training.

[11] file:///C:/Users/Dr%20SARVESH/Downloads/29283_1981_SUR%20(1).pdf THE WRITTEN LANGUAGES OF THE WORLD: A Survey of the Degree and Modes of Use VOLUME 2 IN D I A Book 1 CONSTITUTIONAL LANGUAGES B.P. MAHAPATRA G.D. McCONNELL Authors P. PADMANABHA V.S. VERMA Registrar General & Census

[12] Meganathan, R. (2025, January 30). Multilingualism and the language classroom (SSRN Working Paper No. 5230020). SSRN. https://doi.org/10.2139/ssrn.5230020

[13] Singh, A. K. (2025). From policy to practice: Challenges and pathway for advancing multilingual education through India's National Education Policy 2020. Policy Futures in Education, 23(4), 746–765. https://doi.org/10.1177/14782103251320532

[14] Tsimpli, I. M., Mukhopadhyay, L., Treffers-Daller, J., Alladi, S., Marinis, T., Panda, M., Balasubramanian, A., & Sinha, P. (2019). Multilingualism and multiliteracy in primary education in India: A discussion of some

methodological challenges of an interdisciplinary research project. Research in Comparative and International Education, 14(1), 54–76. https://doi.org/10.1177/1745499919828908

[15] Singh, R. K., & Kathuria, S. J. (2024). Rethinking teacher education in context to NEP 2020 and multilingual classrooms. ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts, 12(12), 1007–1017. https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v12.i12.2024.5802

[16] Vygotsky, L. S. (1986). Thought and language (A. Kozulin, Trans. & Ed.). Cambridge, MA: MIT Press. (Original work published 1934)

[17] Skutnabb-Kangas, T. (2000). Linguistic genocide in education—or worldwide diversity and human rights? Mahwah, NJ: Lawrence Erlbaum Associates.

[18] Government of India. (1950). The Constitution of India (Article 350A). New Delhi: Government of India.

[19] UNESCO. (2003). Education in a multilingual world. Paris: UNESCO.

[20] García, O. (2009). Bilingual education in the 21st century: A global perspective. Malden, MA: Wiley-Blackwell.

डॉ सर्वेश मौर्य
असिस्टेंट प्रोफेसर, समाज विज्ञान और मानविकी शिक्षा विभाग
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर (एनसीईआरटी) - 751022
Email: drsarveshmouryancert@gmail.com, drsarveshmouryarieb@gmail.com
Mobile No-9999508476